(1)

दपेरवां गांव सनावड़ा वात कोश वार्ता,

4-5-21 200m0028 -

तब भाभी ने कहा ऊंचा आबल रा मळीया
नीची लख चोरासी, हाव

तब खीम सिंह जी आबल के गाँव गया,
और आबल के दरबार पर जा खड़ा हुआ
और बहुत बारिश हो रही थी,
और जो छत से पानी रहा था ~~उसने~~
उसने उस पानी को रोक दिया।

तब आबल बोली परनाले पानी थोम्भ्या
आभों हेकी धार थे कपे राजा रा

कुंवर कहजों थे कुण हो राज कुंअर,

खीम जी दो नाम से पुकारे
जाते थे

प्रेम कहानी (2)

हाकम रवां सलावता

खीम जी बोला

(1) बेटो प्रताप सिंह रो गढ़ चोटील गाँव में आबल निरखण आविया म्हारो नरपत. खीमो नाम

आबल ने कहा

(2) खराज रहजो खीम जी पुछो मन री बात, डेरो दिराओ हरिये बाग मों सिव द्दयों प्रभात

खीम जी ने कहा

(3) थोरो तेग तरवार रो म्हारो तेग अटे म्हें कवारी सों बातों करो म्हारी रजपुती हटे।

आवल

(4) खिमा रवारुक रो चोर कर चोरी थागो गय लेगयों करजीये कोर खूटक लगाये खीमा जी नावद लीये बरवरालीये

(5) नावद अंचो को जात थे ऊकाल ता मत ऊर जो थाने थार देसे कील तार

(6) ऊठे कसीया थार आवल ऊधालीया धातीया ऊ जावे खीये रे लार जग देव मेलो करो

खीमजी री कहानी

(3)

देखो जगावड़ा खीमजी री कहानी→

खरगोंसो री खालड़ी, सायजादों री एस

① खीमजीने कहा→. खरगोसों री खालड़ी, कंवला लागे केश,
भाभच मुझे बन्नया (गडरो) डो, सायजादों री एस→.

यह एक कहानी देवर भोजाई की प्रेम कथा है।
देवर का नाम खीमजी था, और भोजाई का नाम
काबल था, काबल और आबल दो बहने थी
दोनो बहने बहुत सुन्दर और गुणवान थी।
खीमजी राजपूत चोटीला गांव व पाली जिला
के रहने वाले प्रतापसिंह से लड़के थे। खीमजी
शिकार के बहुत ही सोकीन थे। कभी सिंह की शिकार
लाते कभी गोड़वान कभी किसी की शिकार करते।
तो एक दिन खीमजी खरगोस की शिकार ले आये।
और शिकार खरगोस की लाकर अपनी भाभी (भोजाई)
को बार-बार पुछने लगे कि ए जानवर बहुत ही
अच्छा है और इनके बाल केश कितने बारीक
है। बार-बार पूछने पर भाभी ने खीमजी को

"~~कोचवे केलावत री कहानी~~"

(5) कहा कि देवर खीमजी यही खरगोस के बाल कैश मेरी बहीन के पग में लगने से वो पैर बारह मांस खड़कने लगा। तब खीमजी ने सोच कर कहा कि भाभीजी यही खरगोस का बाल केश आपकी बहीन आबल के पैर में लगा तब पैर दुखने लगा तो आपकी बहीन कैसी है सो आपकी बहीन आबल से शादी करूगा। अब ~~भाभीसा~~ खीमजी ने शादी का कुछ इनकार कर दिया। तब भाभीसा ने सोचा अब से खीमजी कोई ताना देने के बाद खीमजी आबल से शादी करेगा। अब हाली जो बरसात के बाद जो किसान खेत जड़ने जाते है और फसल गेहु, बाजरा, ग्वार, मूंग, मोठ, तिल आदि खेत में होते। उनको हाली बोलते है। हाली खड़ने के बाद हल को रोका जेर, से हल खड़ते थे और हाली खाना खाने के लिए बैठे और खीमजी भी वही

(5)

पर खेत में बैठे थे, तब काबल उन हालियों के लिए खाना लेकर आई। तो हालियों ने खाना खाया और खीमजी को रोटी का कहने पर इनकार कर दिया। तब काबल जो खीमजी की भोजाई ने कहा कि —।

जिमो हाली जिमो बालदी, जिमो सगलो साथ एक नी जिमे खीमजी, जिमे आबल रे हाथ — ये दोहा कहने पर खीमजी ने मन में ठान ली कि अगर शादी करूंगा तो आबल से करूंगा। अब खीमजी ने अपनी भोजाई को दोहे में कहा —

भामच हुआ मेहल मों, कदीये रालो फेरा। उआ होय बताय दो भोंजी, आबल हंदो डेरा —

खीमजी ने अपनी भोजाई को कहा कि आपको पहले आबल का गांव का रास्ता कोनसा है मेरे को बताओ।

(6)

भाभीसा ने कहा. ओ डोडे ओ डोडड़े, ए बिजलासरीपाट

ऊँचा आबल रा मालिया ~~बि~~ चेलज चौरासी होर

यह भाभीसा के कहने पर खीमजी ने कहा कि भोजाई

में आपके कहने पर आपकी बहीन आबल से शादी

करने घोड़े सवार होकर जा रहा हूं। तब घोड़े की

चाल को कवीयो ने कहा. मैदान बताय लंगुर

ज्यो मलंगो, पोड़ बताय घोर घरा, बाग संभाय

और मागल गायके, तीर अनोखीय आड तीर। -

अब घोड़े का रंग कैसा था. काला कबुतर

चिणा ही चेंगा. वाह कडुवा एक मेद, समन्दर सेलरीयों

~~सेल~~ खुरसाणीया तेज धावणा, खेत खुरसाणीया

एक बेक यही घोड़े का रंग था -

जल गुणे न थल गुणे, गुणे नही रेण अंधार

जोवे तुरी खेडावतो, प्रेम तणे उपकार।

(7)

तो रवीमजी घोड़े पर सवार होकर आबल के गांव
पहुंच गया, वहां पहुंचने पर मुसलाधार वर्षा होने
पर आबल के महल के परनाले रुक गई,
तब आबल ने अपने दासीयों को कहा कि-
ये अचानक परनाल कैसे रुक गई -
परनालीयों पानी रुगीयो, आगो एकण च्यार
किण दिसारा राजवी, कुण है राज कुमार -
पिता मोंको प्रतापसिंह, गढ़ चोटीलो गाम,
आमल निरखण आवीयो, रपत खींवो नाम -
रवता रहीलो खीमजी, पूछी मन री बात,
डेरो देरावो हरीये बाग में सीख डेरावो पर मात,
आमल ऊंचालो रचातीया, डेरे कलीया माय।
मिन कीर [illegible] डेरे, जावे खींवे रे लार-
मिलवारी मिन मांय, मोड़ बंध्या मिलया नहीं
मिलिया मसाणा मांय, जोरों ऊपर खीमजी,

11

(8)

खीम जी की गाथा

यह एक देवर और भाभी की कहानी है।

उन दोनों के बीच बहुत प्रेम था।

भाभी का नाम काबल था और दो बहने थी। दुसरी का नाम आबल था,

देवर का नाम खीम जी था, पिता का

नाम प्रताप सिंह था, गाँव चोटीला जिला पाली, राजस्थान

यह एक देवर भाभी का कीस्सा था।

एक दीन खीम सिंह जी जा रहे खेत उन्होंने अपनी भाभी से कहा की आप मेरे लिए खाना लेकर आना। मै खेत जा रहा हु,

तब भाभी खाना लेकर गई फिर खिम सिंह ने अपनी भाभी से कहा भाभी आप खाना लेकर तो आई हो लेकिन खाना अच्छा नही है।

तब भाभी ने गुस्से मे आकर कहा की अगर आप को मेरे हाथ का खाना अच्छा नही लगता तो आप ~~आब~~ आबल के हाथ का खाना = खाना भाभी ने एक ताना मारा, तब खीम सिंह ने गुस्से मे आकर भाभी को कहा आबल कहाँ ~~है~~ रहती है।